



नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर रजनीश कुमार शुक्ल को
मोस्ट डेडीकेटेड वाइस चांसलर अवार्ड

वर्धा, 16 सितंबर 2020: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) के



कुलपति प्रोफेसर रजनीश कुमार शुक्ल को मोस्ट डेडीकेटेड वाइस चांसलर अवार्ड से सम्मानित किया गया है। शिक्षा क्षेत्र में उत्कृष्टतम नेतृत्व के लिए डाइनेर्जिक बिजनेस सॉल्यूशन की ओर से प्रो. शुक्ल को गोल्डन एम अवार्ड्स सम्मान दिया गया है। आचार्य विनोबा जी के जन्म दिवस पर यह सम्मान मिलने पर कुलपति प्रो. शुक्ल ने कहा कि 'इसे विनोबा की भूमि के तप का सुपरिणाम समझता हूँ'।

इसके पहले कुलपति प्रो. शुक्ल को अखिल भारतीय दर्शन

परिषद का कांट त्रिशताब्दी सम्मान, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ का उत्तरप्रदेश भाषा सम्मान, धर्मसंघ काशी का करपात्र गौरव सम्मान और वाग्योग चेतनापीठम्, वाराणसी का वाग्योग सम्मान प्राप्त हुआ है।

अप्रैल 2019 में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में कार्यभार संभालते ही प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल सर ने विश्वविद्यालय में अकादमिक उत्कृष्टता और नवाचारी संकल्पनाओं के माध्यम से अपनी अलग पहचान बनायी। कोरोना त्रासदी के दौरान आधुनिक तकनीक के प्रयोग को बढ़ावा देते हुए ऑनलाइन कक्षाओं के

संचालन को उन्होंने प्राथमिकता दी। केंद्र सरकार द्वारा शिक्षा नीति 2020 की घोषणा किए जाने के तुरंत बाद उनके कुशल मार्गनिर्देशन में शिक्षा नीति 2020 : एक सिंहावलोकन शीर्षक से ई-पुस्तक का प्रकाशन किया गया और पूरे भारत में किसी केंद्रीय विश्वविद्यालय की ओर से किया गया यह प्रथम उपक्रम रहा। विद्यार्थियों में आत्मनिर्भरता लाने की दिशा में उन्होंने अर्न बाई लर्न योजना को लागू किया। विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों के माध्यम से चरखा और करघा चलाये जाने की महत्वाकांक्षी योजना भी उन्होंने शुरू की। कोरोना काल में लॉकडाउन के चलते ऑनलाइन राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों का सफल संचालन उनके नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में किया गया और यह क्रम निरंतर जारी है।

दर्शन और तत्वज्ञान के शिक्षक प्रो. शुक्ल अखिल भारतीय दर्शन परिषद के कार्यकारी अध्यक्ष भी हैं। वे भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद के सदस्य सचिव, भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद के सदस्य सचिव भी रहे हैं। वे हिमांचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय और गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय की कार्यपरिषद के सदस्य भी हैं।

प्रो. शुक्ल की सात पुस्तकें प्रकाशित हैं और सौ से ज्यादा शोध पत्र, आलेख देश और विदेश की विभिन्न शोध पत्रिकाओं आदि में प्रकाशित हुए हैं। वे अखिल भारतीय दर्शन परिषद की शोध पत्रिका 'दार्शनिक त्रैमासिक' के पाँच वर्षों तक मुख्य संपादक रहे हैं। इसके साथ ही रत्नगर्भा और संस्कृत शोध संस्थान, वाराणसी की अर्धवार्षिक पत्रिका संस्कृति के संपादकीय बोर्ड के सदस्य रहे हैं। प्रो. शुक्ल जर्नल ऑफ इंडियन काउंसिल ऑफ फिलासॉफिकल रिसर्च और भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद के कार्यकारी संपादक भी रहे हैं। उनके शोधनिर्देशन में 23 छात्रों ने पीएच-डी उपाधि प्राप्त की है। वे नियमित रूप से दर्शन और धर्म तथा वैचारिकी पर ब्लॉग लेखन भी करते हैं। विभिन्न समाचार पत्र-पत्रिकाओं में उनके रचनात्मक आलेख नियमित रूप से प्रकाशित होते रहते हैं।

**हिंदी विश्वविद्यालयाचे कुलगुरु प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल यांना
मोस्ट डेडीकेटेड व्हाइस चांसलर सन्मान**

वर्धा, 16 सप्टेंबर 2020: महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र येथील कुलगुरु प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल यांना मोस्ट डेडीकेटेड व्हाइस चांसलर समान देऊन गौरविण्यात आले आहे. शैक्षणिक क्षेत्रात सर्वोत्कृष्ट नेतृत्वाकरिता डाइनेर्जिक बिजिनेस सॉल्यूशनच्या वतीने प्रो. शुक्ल यांना गोल्डन एम अवार्ड्स देण्यात आला. आचार्य विनोबा भावे

यांच्या जन्म दिनी हा सन्मान मिळाला असून हा सन्मान बिनोबाजींच्या भूमीमधील तपाचा सुपरिणाम होय अशा शब्दात त्यांनी यावर आपली प्रतिक्रिया व्यक्त केली.

याआधी कुलगुरु प्रो. शुक्ल यांना अखिल भारतीय दर्शन परिषदेचा कांट त्रिशताब्दी सन्मान, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनौचा उत्तरप्रदेश भाषा सन्मान, धर्मसंघ काशीचा करपात्र गौरव सन्मान आणि वाग्योग चेतनापीठम्, वाराणसीचा वाग्योग सन्मान प्राप्त झाला आहे.

एप्रिल 2019 मध्ये महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयाचे कुलगुरु म्हणून कार्यभार ग्रहण केल्यानंतर प्रो. शुक्ल यांनी अकादमिक उत्कृष्टता आणि नवाचारी संकल्पनांच्या माध्यमातून शैक्षणिक जगतात आपली एक वेगळी ओळख निर्माण केली. कोरोना संकटाच्या काळात आधुनिक तंत्रज्ञानाचा वापर करत ऑनलाइन शिक्षणाला त्यांनी प्राधान्य दिले. केंद्र सरकारच्या नव्या शैक्षणिक धोरणाची घोषणा झाल्यानंतर त्यांच्या कुशल मार्गदर्शनात शैक्षणिक धोरण 2020 : एक सिंहावलोकन हे ई-पुस्तक काढण्यात आले. विद्यार्थ्यांमध्ये आत्मनिर्भरता आणण्यासाठी त्यांनी 'कमवा आणि शिका' ही योजना लागू केली. चरखा आणि हातमाग चालविण्याची महत्वाकांक्षी योजनाही त्यांनी सुरू केली. कोरोना काळात ऑनलाइन राष्ट्रीय तसेच आंतरराष्ट्रीय चर्चासत्रांचे यशस्वी संचालन त्यांच्या मार्गदर्शनात करण्यात आले आणि सध्याही चालू आहे.

दर्शन आणि तत्वज्ञानाचे शिक्षक प्रो. शुक्ल अखिल भारतीय दर्शन परिषदेचे कार्यकारी अध्यक्ष आहेत. त्यांनी भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नवी दिल्लीचे सदस्य सचिव पद भूषविले आहे. ते हिमांचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय आणि गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालयाच्या कार्यपरिषदेचे सदस्य आहेत.

प्रो. शुक्ल यांची सात पुस्तके प्रकाशित आहेत तर शंभराहून अधिक शोध पत्र, आलेख, देश-विदेशातील मासिके आणि वृत्तपत्रांमध्ये प्रकाशित झाले आहेत. ते अखिल भारतीय दर्शन परिषदेच्या 'दार्शनिक त्रैमासिक' चे पाच वर्ष पर्यंत मुख्य संपादक राहिले असून रत्नगर्भा व संस्कृत शोध संस्थान, वाराणसीच्या संस्कृती या अर्धवार्षिकाच्या संपादकीय मंडळाचे सदस्य राहिले आहेत. त्यांनी जर्नल ऑफ इंडियन काउंसिल ऑफ फिलासॉफिकल रिसर्च तसेच भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषदेच्या हिस्टोरिकल रिव्यूचे कार्यकारी संपादक पद सांभाळले आहे. त्यांच्या शोधनिर्देशनात 23 विद्यार्थ्यांनी पीएच-डी पदवी प्राप्त केली आहे. ते नियमितपणे दर्शनशास्त्र आणि धर्म विषयावर ब्लॉग लेखन करतात. त्यांचे विविध वृत्तपत्रांमध्ये रचनात्मक आलेख नियमित प्रकाशित होत असतात. त्यांना मिळालेल्या या सन्मानाबद्दल त्यांचे सर्व स्तरातून अभिनंदन होत आहे.